NATIONAL SEMINAR

on

"MODALITIES OF SOCIAL LEARNING : PROCESS AND APPLICATION"

October 06-07, 2013

Department of Education

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Re-accredited Grade 'A' by NAAC

Ladnun - 341 306, (Rajasthan)

Scanned by CamScanner

विषय सूची

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त की व्यवहारपरक प्रक्रिया	डॉ. बी.एल. जैन
आचार्य तुलसी का शिक्षा मनोविज्ञान	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया एवं अनुप्रयोग	प्रो. सन्तोष मित्तल
कक्षा–कक्ष में सामाजिक अधिगम का अनुप्रयोग	डॉ. अमित सिंह राठौड़, भावना राठौड़
Social Learning and Concerning Issues	Dr. Nitin Jain
सामाजिक अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार	डॉ. सुनीता भार्गव, श्री राजपाल सिंह राठौड़
Concept of Social Learning Theory	Dr Ashok Kumar Sidana, Dr Sampark Acharya
Social Learning in Educational Institutions	Dr. Manish Bhatnagar, Mrs. Pragati Bhatnagar
Educational Responses to Social Change ...	Dr. Girdhari Lal Sharma
Educational Implication of Social Learning ...	Bhabagrahi Pradhan, Dr. Vishnu Kumar
Concept of Social Learning	Sunita Gehlot
Application of Social Learning Theory in Classroom	Krishna
कक्षा–कक्ष में सामाजिक अधिगम का अनुप्रयोग	डॉ. सरोज राय
सामाजिक अधिगम : कक्षा–कक्ष	अदिति गौतम, पी. के. भटनागर
सामाजिक अधिगम : विकास की प्रक्रिया	डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. युवराज सिंह खँगारोत 54-5
सामाजिक अधिगम एवं सामाजिक विकास	पुष्पा मिश्रा
शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक अधिगम सिद्धान्त ...	जे.पी. सिंह, डी. आर. खोजा
सामाजिक अधिगम : अनुकरण एवं अवलोकन प्रक्रिया	डॉ. अमिता जैन, विनोद कुमार जैन
सामाजिक अधिगम एवं शैक्षिक अनुप्रयोग	डॉ. गिरिराज भोजक
सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक अभिप्रेत	गिरधारीलाल शर्मा
सामाजिक अधिगम : प्रक्रिया एवं अनुप्रयोग	डॉ. आभा सिंह, मनीषा कुमारी विजय
अधिगम में प्रायोगिकता का महत्त्व	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज
बालकों में सामाजिक अधिगम एवं मानसिक विकास	लक्ष्मण कुमार माली
सामाजिक संज्ञानात्मक के अन्तर्गत स्वनियंत्रण ...	सुप्रिया दत्ता
सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया कक्षा–कक्ष में ...	विष्णु पाण्डिया, सोनू कुमारी
कक्षा में सामाजिक अधिगम का अनुप्रयोग	रेणु चौधरी
कक्षा–कक्ष में सामाजिक अधिगम का स्थानान्तरण ...	एकता चौहान

Scanned by CamScanner

सामाजिक अधिगम : विकास की प्रक्रिया

डा. बिजेन्द्र प्रधान*
डा. युवराज सिंह खँगारोत**

In a broad sense all learning is social learning- "James L. Mursell "

सारांश – मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसका समाजिकरण परिवार एवं समाज में होता हैं जिस तरह के परिवार एवं समाज के अपने मूल्य, संस्कृति, सिद्धान्त, कार्य प्रणाली आदि होते हैं। व्यक्ति का सामाजिकरण उसी प्रकार का होता है। मनुश्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जीवन के अन्तिम प्राण तक सीखता रहता है। सीखने को ही अधिगम कहते है।

सामाजिक परिवेश में प्राप्त अधिरगम की सामाजिक अधिगम की संज्ञा दी जाती है। सामाजिक रीति–रिवाज, परम्पराएं, मान्यतायें, पारस्परिक सम्बन्ध आदि प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से व्यक्तित्व को निखरने में सहायक होती है। जिस व्यक्ति के अपने परिवार तथा समाज के सदस्यों से जितनें अधिक मधुर सम्बन्ध होगें तथा जो समाजिक किया–कलापों में अधिका अधिक सहभागिता दर्ज कराते है, उन्हें उतनें ही अधिक सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं और वे जीवन में विकास की चरम उँचाइयों को प्राप्त करते है। अतः यह कहा जा सकता हैं कि समाजिक अधिगम विकास की एक प्रक्रिया है।

परिचयः– शिशु जन्म के समय पूर्णतः असहाय होता है, अपनी आवश्यकता के लिए माता–पिता अर्थात परिवार पर निर्भर रहता है, किन्तु आयु में वृद्धि के साथ–साथ उसकी ज्ञानेन्द्रिओं में चेतना शक्ति भी प्रबल होती जाती है। चेतना शक्ति के जागृत होने पर वातावरण के प्रति उसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है। शैशवावस्था से ही बालक वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने का प्रयास आरम्भ कर देता है। वातावरण के साथ व्यवस्थित होने का प्रयत्न आरम्भ कर देता है। वातावरण के साथ अनुकूलन व्यवस्थापन करते समय की गई कियाओ के फलस्वरुप बालक जो अनुभव अर्जित करता है, वे उसको अपेक्षित व्यवहार करने की प्रेरणा देते हैं। इन अनुभवों के आधार पर बालक अपने व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुभव के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है।

गेटल के अनुसार– अनुभव या प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में सुधार ही अधिगम है। इसी तरह से कानबेक ने भी कहा है कि अनुभव के परिणाम स्वरुप व्यवहार में परिलक्षित परिवर्तन ही अधिगम है।

आदत, ज्ञान और अभिवृत्तियों को अर्जित करना ही सीखना है, कार्य करने, कठिनाई या बाधाओं पर विजय प्राप्त करने या नवीन परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने में सीखने की प्रक्रिया निहीत रहती है, यह प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है, अर्थात हम कह सकते है कि अधिगम हमारे जीवन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसीलिए व्यक्ति के विकास में अधिगम का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सामाजिक ताने बाने में व्यक्ति जो भी सीखता है उसे समाजशास्त्रियों ने सामाजिक अधिगम का नाम दिया है। व्यक्ति अपने जीवन में दूसरों से न केवल सम्पर्क स्थापित करना सीखता है, वरन यह भी सीखता है कि दूसरों को सहयोग देकर और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करके हम अपनी स्वयं की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका सहयोग और सहायता प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नही दूसरों के सम्पर्क

*सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ
**सहायक आचार्य, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

Scanned by CamScanner

में आकर हम अनेक नये अनुभव प्राप्त करते हैं और अनेक नई बातें सीखते हैं, जिसके फलस्वरुप हमारे व्यवहार में चेतन या अचेतन रुप में परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार अधिगम एक समाजिक प्रकिया है।

सामाजिक अधिगम किसी चुनौती या समस्या से प्रारम्भ होता है, जिसके लिए कोई तात्कालिक और बना बनाया समाधान नही होता है। सामाजिक अधिगम की प्रकिया सम्पर्क के कारण आरम्भ होती है। सामाजिक मनोविज्ञान का आधारभूत तथ्य यह है कि व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में आना चाहते हैं और एक दूसरे से दूर भी रहना चाहते हैं। दूसरे व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करने की प्रवषति सार्वभौमिक है क्योंकि सम्पर्क के द्वारा ही व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। सम्पर्क स्थापित करने की यह प्रकिया आजीवन चलती रहती है। बालक, किशोर और वयस्क के रुप में हम दूसरों से सम्पर्क स्थापित करते रहते हैं। सभी प्रकार का अधिगम सामाजिक होता हैं, क्योंकि इसी के कारण व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होता है। परन्तु "सामाजिक अधिगम" अपनी एक विचित्र विशेषता के कारण सभी प्रकार के अधिगमों से भिन्न है। वह विशेषता यह है कि यद्यपि व्यक्ति सारे समय इसकी प्रकिया में व्यस्त रहते हैं, पर व्यक्ति को बहुधा इस बात का कोई ज्ञान नही होता है कि वह कुछ सीख रहे हैं। यह प्रकिया उनमें सतत् चलती रहती है, तथा वे निरन्तर कुछ न कुछ सीखते रहते हैं और उनका विकास होता रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति समाज के किसी न किसी समूह या संस्था से जुड़ा होता है और समूह या संस्था में अन्तःकिया होती रहती है। इसी अन्तः किया के कारण, वे एक–दूसरे को अपने व्यवहार से उद्दीप्त करते हैं और होते हैं। अधिगम की मात्रा मुख्यतः समूह/संस्था के सदस्यों में अन्तःकिया द्वारा निश्चित होती है। सीखना– अनुभव या व्यवहार में परिवर्तन करना है।

सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त – आधुनिक युग में सीखने के अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं, यथा – थर्नडाइक का उद्दीपक प्रतिकिया सिद्धान्त , हल का प्रबल सिद्धान्त, पावलो का सम्बद्ध प्रतिकिया सिद्धान्त इत्यादि। शिक्षकों के समूह के इन सिद्धान्तों के प्रति आपति पर सटर ने 1954 में अपनी पुस्तक "समाजिक अधिगम और क्लिनिकल मनोविज्ञान" में सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

सामाजिक अधिगम की प्रकिया– अधिगम की प्रकिया में कोई एक लक्ष्य तथा उस लक्ष्य तक पहुचने में बाधा दोनों ही सम्मिलित रहते हैं। सीखना सदैव अर्थपूर्ण होता है। व्यक्ति के सामने जब कोई अर्थपूर्ण लक्ष्य होता है तो वह उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने के लिए वह अनेक प्रकार की अनुकियाएं करता है किन्तु इनमें से जो किया उपयुक्त होती है, उसके द्वारा वह बाधाओं को दूर कर लक्ष्य तक पहुंच जाता है। इस उपयुक्त किया का वह चयन कर लेता है और बार–बार अभ्यास करके पुष्ट कर लेता है।

अधिगम एक ऐसी प्रकिया है जो व्यक्ति को सभी प्रकार के वातावरण के साथ व्यवस्थित होने एवं व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक होती है। यह व्यक्ति के जीवन में जन्म से मष्त्यु तक चलती रहती है। यह विशाल जगत इतनी आश्चर्यजनक वस्तुओं, कियाओं एवं ज्ञान का भण्डार है कि वह सदैव मानव को कुछ न कुछ सीखने के लिए नवीनता प्रस्तुत करता रहता है। मानव नवीन अनुभवों को अर्जित करके अपने व्यवहार में अनुकूल व्यवस्थापन हेतु परिवर्तन करता रहता है। अधिगम की प्रकिया केवल मानवों में ही नही पाई जाती अपितु संसार के सभी प्राणी कुछ न कुछ सीखते हैं। सीखना सदैव वातावरण के प्रति प्रतिकिया के रुप में भी होता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है वह विभिन्न प्रकार के वातावरण में रहता है और उसके अनुसार वह सीखता है और अपने में परिवर्तन कर विकास करता है।

उपसंहार– सामाजिक अधिगम व्यक्ति के लिए अवर्णनीय रुप से हितकर है और उनके विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक अधिगम के उपयोग से हममें यह आशा उत्पन्न हो जाती है कि अधिकांश व्यक्ति अपने व्यवहार सम्बन्धी प्रतिमान के व्यवहार द्वारा प्रदान किये जाने वाले उद्धीपन और प्रबलन के विभिन्न प्रतिमानों के फलस्वरुप ज्ञान अर्जित करते हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. पाठक पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर; आगरा, 2007
2. सिंह, रामपाल, अधिगम का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर; आगरा, 2007
3. यादव, सियाराम, अद्यिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अद्यिगम प्रकिया, शारदा पुस्तक भवन 2008
4. जेम्स, बीलीयम, प्रिसीपल ऑफ साइकोलॉजी, कोसीमों इन– न्यूयार्क, 2007

Scanned by CamScanner